आम प्रसंस्करण में एआइ का स्टार्टअप, बनेंगे 'राजा'

अमूज उत्पाद के साथ प्रद्युम्न रत्न पांडेय व इंजीनियर अमर्त्य सागर पांडेय • जागरण

धर्मेंद्र अवस्थी • जागरण

लखनऊ : फलों के राजा आम में पहली बार आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस (एआइ) का उपयोग हुआ है। उत्पाद के रंग और खुशबू में रत्तीभर भी बदलाव किये बिना 'अमूज' बना है, जो माजा व फ्रूटी जैसे नामी ब्रांडों को बाजार में टक्कर दे सकता है। मलिहाबाद का दशहरी स्वाद में बेजोड़ है, अब आम प्रसंस्करण की दिशा में कदम बढ़ाने वाले लखनऊवा की मेधा कसौटी पर है, जिसने बेंगलुरु में नौकरी करने की जगह अपनी माटी में आम का स्टार्टअप करने की ठानी है।

चौक नेवाजगंज की संकरी गलियों में दौड़ लगाने वाले अमर्त्य सागर पांडेय की एक्सप्रेस वे पर फर्राटा भरने की चाहत रही है। हजरतगंज के सेंट फ्रांसिस स्कूल से 10वीं व माउंट फोर्ट महानगर ब्वायज से 12वीं की परीक्षा पास करने के बाद गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय ग्रेटर नोएडा से आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस में बीटेक किया। बेंगलुरु में मल्टीनेशनल कंपनी में काम करने का मौका मिला लेकिन, अमर्त्य ने अपनी माटी में मेहनत करने की मंशा जताई तो शिक्षक पिता प्रद्युम्न रत्न पांडेय ने उसे हाथों-हाथ लिया।

समझाया, काकोरी के हसुआपुर गांव में 14 बीघे का आम का बाग है, आम को एआइ जैसी तकनीक की जरूरत है। पिता-पुत्र ने केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (सीआइएसएच) रहमानखेड़ा काकोरी से उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण लिया। फसल के यौवन पर पहुंचते ही 'अमूज' नामक उत्पाद तैयार हुआ। पल्प (गूदा) से आम स्क्वैश में 33 प्रतिशत पल्प दिया। दूसरा उत्पाद आम पना रामकेला जैसे आमों से खट्टा-मीठा स्वाद वाला तैयार किया। दोनों में प्रिजर्वेटिव बैक्टीरिया (परिरक्षक) का उपयोग दशमलव तीन प्रतिशत किया। आम महोत्सव में दोनों उत्पादों का डंका बजा है।

नई राह

- आम प्रसंस्करण में पहली बार लखनऊ के इंजीनियर ने किया एआइ का उपयोग
- इंजीनियर अमर्त्य ने शिक्षक पिता प्रद्युम्न संग खाद्य प्रसंस्करण का लिया प्रशिक्षण

सीआइएसएच से प्रशिक्षण लेकर अमर्त्य ने अच्छी पहल किया, क्षेत्र में युवाओं को तेजी से आने की जरूरत है। एआइ का उपयोग सकारात्मक दिशा में होना चाहिए।

–डा. आलोक कुमार गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक सीआइएसएच

मलिहाबाद क्षेत्र में आम प्रसंस्करण इकाई नहीं है, किसान इसकी मांग कर रहे हैं। सीआइएसएच ने पहले मशीन मुहैया कराई थी, युवा आगे आएं तो बेहतर रहेगा।

–उपेंद्र कुमार सिंह, पुरस्कृत आम किसान